Integral Research

(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed
Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

भारतीय परिप्रेक्ष्य में युवा संस्कृति के बदलते आयाम एवं सामाजिक परिवर्तन

[1]प्रोफेसर (डॉ) मुकेश चंद [2]डॉ जीवन कुमार

[1]समाजशास्त्र विभाग, बी०एस०ए० कॉलेज, मथुरा.

[2]असि० प्रोफेसर - समाजशास्त्र विभाग, नेहरू मेमोरियल शिव नारायण दास (पी०जी०) कॉलेज बदायूँ

DOI: https://doi.org/10.57067/ir.v3.i7.637

Abstract

युवा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रगति के प्रमुख वाहक होते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में युवा संस्कृति निरंतर परिवर्तनशील है, जिस पर वैश्वीकरण, नगरीकरण, डिजिटलीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया तथा नई शिक्षा एवं रोजगार की प्रवृत्तियों का व्यापक प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में युवा संस्कृति के बदलते आयामों तथा उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि वर्तमान युवा पारंपरिक सामाजिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। इससे परिवार, शिक्षा, रोजगार, लैंगिक समानता, राजनीतिक सहभागिता, उपभोक्तावाद तथा सामाजिक संबंधों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। एक ओर डिजिटल तकनीक, नवाचार, उद्यमिता और वैश्विक दृष्टिकोण ने युवाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक द्वंद्व, मानसिक तनाव, बेरोज़गारी, सामाजिक अलगाव तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। यह शोध-पत्र संरचनात्मक-कार्यात्मक, संघर्ष तथा सांकेतिक अंतःक्रियावादी दृष्टिकोणों के आधार पर इन परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि युवा संस्कृति सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति है, जिसके सकारात्मक दिशा-निर्देशन हेतु परिवार, शिक्षा, नीति-निर्माताओं तथा समाज की समन्वित भूमिका आवश्यक है।

Keywords: युवा संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, भारतीय समाज, वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, सोशल मीडिया, समाजशास्त्र, युवा विकास।

भूमिका

भारत विश्व का सर्वाधिक युवा आबादी वाला देशों में से एक है। यह जनसांख्यिकीय विशेषता केवल जनसंख्या का आँकड़ा नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण शक्ति भी है। युवा वर्ग किसी भी समाज की ऊर्जा, नवाचार, सृजनशीलता और विकास का आधार माना जाता है। समाज के बदलते स्वरूप में युवाओं की भूमिका सदैव निर्णायक रही है, क्योंकि वे नई विचारधाराओं को स्वीकार करने, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने तथा सामाजिक परिवर्तन को गति देने की क्षमता रखते हैं। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, डिजिटलीकरण तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने भारतीय युवाओं की जीवनशैली, सोच, व्यवहार, आकांक्षाओं तथा सामाजिक संबंधों में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। परिणामस्वरूप भारतीय युवा संस्कृति के अनेक नए आयाम उभरकर सामने आए हैं, जिनका समाज की विभिन्न संस्थाओं एवं सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ा है। समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से संस्कृति समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें किसी समाज के मूल्य, मान्यताएँ, परंपराएँ, रीति-रिवाज, भाषा, कला,

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

जीवनशैली तथा व्यवहार प्रतिमान सम्मिलित होते हैं। युवा संस्कृति, संस्कृति का वह विशिष्ट पक्ष है जो युवाओं की जीवन-पद्धति, विचार, अभिरुचियों, पहनावे, भाषा, मनोरंजन, तकनीकी उपयोग, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सहभागिता तथा भविष्य के प्रति दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है। यह संस्कृति स्थिर न होकर समय, परिस्थितियों और सामाजिक परिवेश के अनुसार निरंतर परिवर्तित होती रहती है। भारतीय समाज में पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों के साथ आधुनिकता एवं वैश्विक प्रभावों का समन्वय युवा संस्कृति को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। इक्कीसवीं सदी में इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), ई-कॉमर्स तथा डिजिटल संचार के विस्तार ने युवाओं के सामाजिक जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। आज का युवा केवल अपने स्थानीय परिवेश तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक संस्कृति, विचारों और जीवनशैली से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल मंचों ने युवाओं के संवाद, अभिव्यक्ति, ज्ञानार्जन, मनोरंजन और सामाजिक सहभागिता के नए अवसर प्रदान किए हैं। साथ ही इन माध्यमों ने पहचान निर्माण, सामाजिक संबंधों तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को भी प्रभावित किया है। इसके परिणामस्वरूप युवाओं के दृष्टिकोण, उपभोग की प्रवृत्तियों, जीवन-मूल्यों तथा सामाजिक व्यवहार में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलते हैं। भारतीय समाज वर्तमान समय में तीव्र सामाजिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। शिक्षा के प्रसार, नगरीकरण, औद्योगीकरण, आर्थिक उदारीकरण, महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, सूचना क्रांति तथा रोजगार के बदलते स्वरूप ने समाज की पारंपरिक संस्थाओं को भी प्रभावित किया है। संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे-धीरे एकल परिवारों ने लिया है, विवाह और पारिवारिक संबंधों के स्वरूप में परिवर्तन आया है, लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा युवाओं में आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की भावना का विकास हुआ है। नई शिक्षा नीति, स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा कौशल विकास कार्यक्रमों ने युवाओं के लिए नए अवसरों का सृजन किया है। दूसरी ओर बेरोज़गारी, मानसिक तनाव, नशे की प्रवृत्ति, साइबर अपराध, सोशल मीडिया की निर्भरता, उपभोक्तावाद तथा सांस्कृतिक असंतुलन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से युवा संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन का संबंध परस्पर पूरक एवं गतिशील है। सामाजिक परिवर्तन जहाँ युवा संस्कृति को प्रभावित करता है, वहीं युवा संस्कृति भी सामाजिक परिवर्तन को नई दिशा प्रदान करती है। आधुनिक समाजशास्त्रियों ने इस तथ्य पर बल दिया है कि समाज में होने वाले अधिकांश नवाचार, सामाजिक आंदोलनों तथा वैचारिक परिवर्तनों के केंद्र में युवा शक्ति ही होती है। भारत में स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर पर्यावरण संरक्षण, महिला अधिकार, डिजिटल नवाचार, सामाजिक न्याय तथा लोकतांत्रिक सहभागिता जैसे क्षेत्रों में युवाओं की सक्रिय भूमिका इसका स्पष्ट उदाहरण है। वर्तमान समय में युवा केवल परिवर्तन के सहभागी नहीं

Received 02 July 2026; Accepted 26 July 2026. Available online: 30 July. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

IR Integral Research
Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

हैं, बल्कि परिवर्तन के प्रेरक एवं नेतृत्वकर्ता के रूप में भी उभर रहे हैं। भारतीय युवा संस्कृति में एक ओर परंपरा और आधुनिकता का समन्वय दिखाई देता है, तो दूसरी ओर वैश्विक संस्कृति और स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती भी विद्यमान है। आज का युवा आधुनिक तकनीक, वैश्विक अवसरों और वैज्ञानिक सोच को अपनाते हुए भी भारतीय संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व देने का प्रयास कर रहा है। यही द्वंद्व और समन्वय भारतीय युवा संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। इस परिवर्तनशील स्थिति का अध्ययन समाजशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों—जैसे संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण, संघर्ष सिद्धांत तथा सांकेतिक अंतःक्रियावाद—के माध्यम से अधिक व्यापक रूप से किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में युवा संस्कृति के बदलते आयामों तथा उनसे उत्पन्न सामाजिक परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, शिक्षा, आर्थिक परिवर्तन, मीडिया तथा सरकारी नीतियाँ भारतीय युवाओं की संस्कृति को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं तथा इन परिवर्तनों का परिवार, शिक्षा, रोजगार, राजनीति, सामाजिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही, युवा संस्कृति के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों का संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय विमर्श को समृद्ध करेगा, बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा सामाजिक संगठनों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। विशेष रूप से विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में युवाओं की रचनात्मक भागीदारी और उत्तरदायी युवा संस्कृति के निर्माण के लिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

युवा संस्कृति की अवधारणा एवं विशेषताएँ

युवा संस्कृति (Youth Culture) आधुनिक समाजशास्त्र की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो युवाओं के जीवन-मूल्यों, व्यवहार, रुचियों, जीवन-शैली, भाषा, फैशन, संचार के तरीकों, सामाजिक संबंधों तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को समाहित करती है। यह केवल आयु-विशेष का संकेत नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक समाज में युवा वर्ग सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख वाहक माना जाता है। यही कारण है कि समाजशास्त्रियों ने युवा संस्कृति को सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण तथा तकनीकी विकास के संदर्भ में विशेष महत्व दिया है।

समाजशास्त्री टैल्कॉट पार्सन्स (Talcott Parsons) के अनुसार युवा अवस्था बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य का संक्रमणकाल है, जिसमें व्यक्ति नई भूमिकाओं, मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों को ग्रहण करता है। इस अवस्था में युवा अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने का प्रयास करते हैं तथा पारिवारिक

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

नियंत्रण से निकलकर व्यापक सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं।

कार्ल मैनहाइम (Karl Mannheim) ने अपनी प्रसिद्ध अवधारणा "Generation Theory" में स्पष्ट किया कि प्रत्येक पीढ़ी अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर विशिष्ट दृष्टिकोण और संस्कृति का निर्माण करती है। उनके अनुसार युवा केवल आयु समूह नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की एक गतिशील शक्ति हैं। वे नए विचारों, नवाचारों तथा परिवर्तनकारी आंदोलनों के प्रमुख वाहक होते हैं।

ब्रिटिश समाजशास्त्री स्टुअर्ट हॉल (Stuart Hall) ने युवा संस्कृति को लोकप्रिय संस्कृति (Popular Culture) और उपसंस्कृति (Subculture) के संदर्भ में समझाया। उनके अनुसार युवा अपनी अलग पहचान स्थापित करने के लिए संगीत, पहनावे, भाषा, मीडिया तथा जीवन-शैली के माध्यम से विशिष्ट सांस्कृतिक प्रतीकों का निर्माण करते हैं। यह संस्कृति कई बार मुख्यधारा की संस्कृति के प्रति प्रतिरोध (Resistance) का भी माध्यम बन जाती है।

डिक हेब्डिज (Dick Hebdige) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Subculture: The Meaning of Style में कहा कि युवा उपसंस्कृतियाँ अपने पहनावे, फैशन, संगीत और व्यवहार के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था के प्रति अपनी असहमति तथा स्वतंत्र पहचान को व्यक्त करती हैं। उनके अनुसार युवा संस्कृति केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक प्रतिरोध का प्रभावी माध्यम है।

भारतीय समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास (M. N. Srinivas) के सामाजिक परिवर्तन संबंधी विचारों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण तथा नगरीकरण की प्रक्रियाओं ने भारतीय युवाओं की संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। शिक्षा, संचार तकनीक, वैश्विक संपर्क तथा आर्थिक अवसरों के विस्तार ने युवाओं के विचारों, आकांक्षाओं और जीवन-शैली में उल्लेखनीय परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

इसी प्रकार एंथनी गिडेन्स (Anthony Giddens) के अनुसार आधुनिक समाज में व्यक्ति अपनी पहचान का निर्माण स्वयं करता है। वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में युवा अपनी व्यक्तिगत रुचियों, सामाजिक अनुभवों तथा वैश्विक प्रभावों के आधार पर नई सांस्कृतिक पहचान विकसित करते हैं। इस प्रकार युवा संस्कृति आज स्थानीय और वैश्विक दोनों तत्वों का समन्वित रूप बन चुकी है।

युवा संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

युवा संस्कृति समकालीन समाज की एक गतिशील एवं परिवर्तनशील सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो सामाजिक संरचना, आर्थिक विकास, वैश्वीकरण, शिक्षा, तकनीकी प्रगति तथा संचार क्रांति से निरंतर प्रभावित होती रहती है। समाजशास्त्रियों जैसे टैल्कॉट पार्सन्स, कार्ल मैनहाइम, स्टुअर्ट हॉल, डिक हेब्डिज, एम. एन.

Received 02 July 2026; Accepted 26 July 2026. Available online: 30 July. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

श्रीनिवास तथा एंथनी गिडेन्स ने अपने-अपने दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है कि युवा केवल समाज का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय निर्माता भी हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में युवा संस्कृति परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करती है, जहाँ युवा वर्ग सामाजिक उत्तरदायित्व, नवाचार, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा वैश्विक दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। युवा संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ में परिवर्तनशीलता, नवाचार एवं सृजनात्मकता, स्वतंत्र पहचान की भावना, प्रौद्योगिकी के प्रति आकर्षण, वैश्वीकरण का प्रभाव, उपसंस्कृति का विकास, सामाजिक परिवर्तन का माध्यम, महत्वाकांक्षा एवं उपलब्धि अभिमुखता, सांस्कृतिक विविधता का सम्मान, मूल्यों में परिवर्तन, सामूहिकता एवं नेटवर्किंग, जोखिम लेने की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय समाज में युवा संस्कृति का ऐतिहासिक विकास

भारतीय समाज में युवा संस्कृति का विकास एक सतत ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। प्रत्येक काल में युवाओं की भूमिका, उनकी सामाजिक स्थिति, जीवन-मूल्य तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति समय की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान वैश्वीकरण और डिजिटल युग तक युवा संस्कृति ने अनेक परिवर्तन देखे हैं। आज का भारतीय युवा परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

प्राचीन भारत में युवा संस्कृति धर्म, नैतिकता एवं शिक्षा पर आधारित थी। गुरुकुल व्यवस्था में युवाओं को केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्मसंयम, सेवा, त्याग तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा भी दी जाती थी। उस समय युवा संस्कृति का उद्देश्य आदर्श नागरिक एवं योग्य नेतृत्व का निर्माण करना था। रामायण के श्रीराम और महाभारत के अर्जुन ऐसे युवाओं के आदर्श उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने कर्तव्य, साहस एवं नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया। प्राचीन काल में आश्रम व्यवस्था का पालन करना प्रमुख उद्देश्य था। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर समान जीवन व्यतीत करते थे। इससे उनमें सामाजिक समानता, सहयोग और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती थी।

मध्यकालीन भारत में युवा संस्कृति पर धार्मिक एवं सामंती व्यवस्था का प्रभाव दिखाई देता है। युवाओं का जीवन मुख्यतः परिवार, कृषि, शिल्प तथा सैन्य गतिविधियों तक सीमित था। इस काल में भक्ति एवं सूफी आंदोलनों ने युवाओं को सामाजिक समरसता, प्रेम, समानता एवं आध्यात्मिकता का संदेश दिया। कबीर, गुरु नानक तथा चैतन्य महाप्रभु जैसे संतों ने युवाओं को जाति-पांति और धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता को अपनाने की प्रेरणा दी। सिख परंपरा में युवा वर्ग को साहस, सेवा और समाज रक्षा के लिए प्रेरित किया गया, जिसका प्रभाव आज भी सिख समुदाय की युवा संस्कृति में देखा जा सकता है।

Received 02 July 2026; Accepted 26 July 2026. Available online: 30 July. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

औपनिवेशिक काल (ब्रिटिश शासन) भारतीय युवा संस्कृति के इतिहास का महत्वपूर्ण चरण था। अंग्रेज़ी शिक्षा, आधुनिक विज्ञान तथा पश्चिमी विचारों के प्रभाव से युवाओं में राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और सामाजिक सुधार की चेतना विकसित हुई। इसी काल में अनेक युवा स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और राष्ट्रीय नेतृत्व का हिस्सा बने। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, खुदीराम बोस, सुभाषचंद्र बोस तथा अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ जैसे युवाओं ने अपने साहस और बलिदान से भारतीय युवा संस्कृति को नई दिशा दी। मात्र 23 वर्ष की आयु में भगत सिंह का बलिदान भारतीय युवाओं के लिए देशभक्ति, साहस और सामाजिक परिवर्तन का प्रेरणास्रोत बन गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय युवा संस्कृति का स्वरूप राष्ट्र निर्माण की दिशा में विकसित हुआ। शिक्षा का विस्तार, औद्योगीकरण, लोकतांत्रिक व्यवस्था तथा पंचवर्षीय योजनाओं ने युवाओं को विकास प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया। सरकार ने राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC), नेहरू युवा केंद्र संगठन (NYKS) तथा विभिन्न युवा कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं में नेतृत्व, अनुशासन, सामाजिक सेवा और राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित किया। NSS के स्वयंसेवक ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान, साक्षरता अभियान तथा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेकर सामाजिक विकास में योगदान देते हैं।

1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारतीय युवा संस्कृति में व्यापक परिवर्तन आया। वैश्वीकरण, निजीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने युवाओं के जीवन-शैली, रोजगार, उपभोग, शिक्षा तथा संचार के स्वरूप को बदल दिया। इंटरनेट, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया के कारण भारतीय युवा वैश्विक संस्कृति से सीधे जुड़ने लगे। फैशन, संगीत, मनोरंजन, खेल, स्टार्टअप संस्कृति और डिजिटल उद्यमिता ने युवाओं की पहचान को नया आयाम दिया। बेंगलुरु, हैदराबाद और गुरुग्राम जैसे शहरों में बड़ी संख्या में युवा सूचना प्रौद्योगिकी, स्टार्टअप तथा डिजिटल व्यवसायों में कार्य कर रहे हैं। अनेक युवा यूट्यूब, इंस्टाग्राम तथा अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से उद्यमी और कंटेंट क्रिएटर बन रहे हैं।

वर्तमान समय में भारतीय युवा संस्कृति बहुआयामी स्वरूप धारण कर चुकी है। एक ओर युवा आधुनिक तकनीक, वैश्विक अवसरों और नवाचार को अपनाते हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद, भारतीय त्योहारों तथा पारंपरिक मूल्यों के प्रति भी रुचि बढ़ रही है। आज का युवा पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, डिजिटल नवाचार तथा उद्यमिता जैसे विषयों पर भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। 'स्टार्टअप इंडिया', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों में लाखों युवा अपनी प्रतिभा और नवाचार के माध्यम से देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान दे रहे हैं। साथ ही, अनेक युवा जल संरक्षण, वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियानों में स्वयंसेवी संगठनों के साथ जुड़कर सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

युवा संस्कृति के बदलते स्वरूप का प्रभाव भारतीय सामाजिक संस्थाओं पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विशेष रूप से विवाह संस्था, जो भारतीय समाज की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं में से एक मानी जाती है, उसके स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। भारतीय परंपरा में विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं, बल्कि दो परिवारों का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक बंधन माना गया है। इसी संस्था के माध्यम से परिवार, नातेदारी, उत्तराधिकार, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नैतिक मूल्यों का संरक्षण और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण होता है।

किन्तु वैश्वीकरण, शहरीकरण, आधुनिक शिक्षा, जनसंचार माध्यमों तथा पश्चिमी जीवनशैली के प्रभाव से युवाओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। इसके परिणामस्वरूप विवाह के पारंपरिक स्वरूप के साथ-साथ लिव-इन रिलेशनशिप जैसे वैकल्पिक संबंधों की चर्चा और कुछ शहरी क्षेत्रों में उनका सीमित प्रचलन भी बढ़ा है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह परिवर्तन पारंपरिक सामाजिक मूल्यों और आधुनिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच उभरते नए सामाजिक संबंधों का संकेत है। हालांकि भारतीय समाज के अधिकांश वर्गों में विवाह संस्था आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से स्वीकृत है, फिर भी बदलती युवा संस्कृति ने इस संस्था के स्वरूप, कार्यों और सामाजिक स्वीकार्यता के संबंध में नई बहसों और विमर्शों को जन्म दिया है।

उच्च शिक्षा संस्थान युवा संस्कृति के निर्माण के प्रमुख केंद्र होते हैं। यहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना प्राप्त होती है। आधुनिक समय में कुछ विश्वविद्यालयों में ऐसी प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलती हैं, जिन्होंने युवा संस्कृति को लेकर सार्वजनिक बहस को जन्म दिया है। इनमें छात्र राजनीति का अत्यधिक ध्रुवीकरण, वैचारिक टकराव, विरोध-प्रदर्शन, हिंसक घटनाएँ, अनुशासनहीनता, नशीले पदार्थों का सेवन, सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक सूचनाओं का प्रसार तथा शैक्षणिक वातावरण से अधिक राजनीतिक गतिविधियों पर ध्यान जैसी प्रवृत्तियाँ शामिल हैं। ये प्रवृत्तियाँ शिक्षा के मूल उद्देश्य को प्रभावित कर सकती हैं।

अन्य प्रमुख विश्वविद्यालय सार्वजनिक बहस का हिस्सा बनते रहे हैं। इसका कारण यह है कि इन संस्थानों में समय-समय पर छात्र आंदोलनों, वैचारिक मतभेदों या विवादों को व्यापक मीडिया कवरेज मिली है। हालांकि, केवल इन घटनाओं के आधार पर किसी पूरे विश्वविद्यालय या उसके सभी छात्रों को “बिगड़ी हुई युवा संस्कृति” का प्रतीक मानना उचित नहीं होगा। इन संस्थानों से अनेक उत्कृष्ट शोधकर्ता, प्रशासक, वैज्ञानिक, शिक्षक और नीति-निर्माता भी निकले हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से विश्वविद्यालय समाज का दर्पण होते हैं। समाज में मौजूद राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तनाव उच्च शिक्षा संस्थानों में भी दिखाई देते हैं। इसलिए किसी भी घटना का विश्लेषण

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

उसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में किया जाना चाहिए।

युवा संस्कृति के बदलते आयाम

परिवर्तन के युग में संस्कृति के भी आयामों में परिवर्तन आया है। वैश्वीकरण-वैश्वीकरण ने युवा संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोड़ दिया है। इंटरनेट, शिक्षा, मनोरंजन, व्यापार तथा संचार के माध्यम से विभिन्न देशों की संस्कृतियों का प्रभाव युवाओं के विचारों, पहनावे, खान-पान और जीवन मूल्यों पर पड़ रहा है। इससे सांस्कृतिक विविधता बढ़ी है, साथ ही पारंपरिक मूल्यों के समक्ष नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। डिजिटलीकरण एवं सोशल मीडिया- डिजिटलीकरण और सोशल मीडिया ने युवाओं के संचार, शिक्षा, मनोरंजन तथा सामाजिक संबंधों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर) और यूट्यूब जैसे मंच अभिव्यक्ति एवं ज्ञान के साधन बने हैं, किन्तु इनके अत्यधिक उपयोग से मानसिक तनाव, साइबर अपराध तथा डिजिटल निर्भरता जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। शिक्षा एवं रोजगार- नई शिक्षा नीति, कौशल विकास, डिजिटल शिक्षा तथा वैश्विक रोजगार अवसरों ने युवा संस्कृति को नई दिशा दी है। आज के युवा पारंपरिक नौकरियों के साथ-साथ स्टार्टअप, फ्रीलांसिंग और उद्यमिता की ओर भी अग्रसर हैं। इससे आत्मनिर्भरता, प्रतिस्पर्धा और नवाचार की भावना को प्रोत्साहन मिला है। उपभोक्तावाद- उपभोक्तावादी संस्कृति ने युवाओं की आवश्यकताओं और जीवनशैली को प्रभावित किया है। ब्रांडेड वस्तुओं, आधुनिक तकनीक, ऑनलाइन खरीदारी तथा विज्ञापनों के प्रभाव से उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ी है। इससे आर्थिक अवसर बढ़े हैं, किंतु भौतिकवाद, अनावश्यक खर्च तथा सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। फैशन एवं जीवनशैली- फैशन और जीवनशैली युवा संस्कृति की प्रमुख पहचान बन चुके हैं। आधुनिक परिधान, फिटनेस, सौंदर्य, खान-पान तथा व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वैश्विक प्रभावों के कारण जीवनशैली में विविधता आई है, जबकि भारतीय परंपराओं और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता भी बढ़ी है।

मुख्य उद्देश्य:

• भारतीय युवा संस्कृति के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना।

• युवा संस्कृति को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी कारकों का विश्लेषण करना।

• बदलती युवा संस्कृति का परिवार, शिक्षा, रोजगार, राजनीति एवं सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

• सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।

भारतीय समाज में युवा संस्कृति के प्रभाव

(क) परिवार एवं विवाह

Received 02 July 2026; Accepted 26 July 2026. Available online: 30 July. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

भारतीय समाज में युवा संस्कृति ने परिवार एवं विवाह संस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। शिक्षा, नगरीकरण, वैश्वीकरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव से युवा विवाह, परिवार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति अधिक जागरूक हुए हैं। संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की प्रवृत्ति बढ़ी है तथा विवाह में जाति, धर्म और समुदाय की अपेक्षा शिक्षा, समानता एवं पारस्परिक समझ को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। साथ ही, महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता ने वैवाहिक संबंधों में समान भागीदारी को बढ़ावा दिया है। यद्यपि इन परिवर्तनों ने पारिवारिक संरचना को आधुनिक बनाया है, फिर भी पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

(ख) सामाजिक मूल्य

युवा संस्कृति ने भारतीय समाज के सामाजिक मूल्यों में व्यापक परिवर्तन लाया है। आज का युवा समानता, स्वतंत्रता, मानवाधिकार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक न्याय जैसे आधुनिक मूल्यों को अधिक महत्व देता है। जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता तथा सामाजिक रूढ़ियों के प्रति युवाओं में आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। डिजिटल माध्यमों और वैश्विक संपर्क ने सहिष्णुता, बहुलतावाद और लोकतांत्रिक चेतना को भी प्रोत्साहित किया है। दूसरी ओर, उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद तथा भौतिकवाद की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण सामूहिकता, त्याग और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे पारंपरिक मूल्यों पर भी प्रभाव पड़ा है।

(ग) राजनीति एवं लोकतांत्रिक सहभागिता

भारतीय लोकतंत्र में युवा वर्ग परिवर्तन का महत्वपूर्ण वाहक बनकर उभरा है। शिक्षा, सोशल मीडिया और राजनीतिक जागरूकता के कारण युवाओं की चुनावी भागीदारी, जनआंदोलनों, सामाजिक अभियानों तथा नीति-निर्माण में रुचि बढ़ी है। युवा भ्रष्टाचार, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने राजनीतिक संवाद और जनमत निर्माण को नई गति प्रदान की है। हालांकि, सोशल मीडिया पर भ्रामक सूचनाओं, वैचारिक ध्रुवीकरण और राजनीतिक दुष्प्रचार जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए युवाओं में विवेकपूर्ण एवं उत्तरदायी लोकतांत्रिक सहभागिता का विकास अत्यंत आवश्यक है।

(घ) आर्थिक विकास एवं उद्यमिता

युवा संस्कृति ने भारत के आर्थिक विकास एवं उद्यमिता को नई दिशा प्रदान की है। उच्च शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल तकनीक तथा सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं के कारण युवा पारंपरिक रोजगार के साथ-साथ स्टार्टअप, नवाचार और स्वरोजगार की ओर भी अग्रसर हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, ई-कॉमर्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल सेवाओं के क्षेत्र में युवाओं का योगदान उल्लेखनीय है। इससे रोजगार के

Received 02 July 2026; Accepted 26 July 2026. Available online: 30 July. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

नए अवसर सृजित हुए हैं और आर्थिक विकास को गति मिली है। साथ ही, आत्मनिर्भरता, नवाचार और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति ने भारत को ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(ङ) लैंगिक समानता

युवा संस्कृति ने भारतीय समाज में लैंगिक समानता की अवधारणा को सुदृढ़ किया है। आधुनिक शिक्षा, संवैधानिक अधिकारों, सोशल मीडिया और महिला सशक्तिकरण आंदोलनों के प्रभाव से युवाओं में स्त्री-पुरुष समानता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। आज महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, विज्ञान, खेल, व्यवसाय और उद्यमिता सहित विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। युवा पीढ़ी बाल विवाह, दहेज प्रथा, लैंगिक भेदभाव और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर रही है। इसके बावजूद वास्तविक समानता सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक मानसिकता, अवसरों की समानता तथा पारिवारिक सहयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है।

युवा संस्कृति के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष

युवा संस्कृति (Youth Culture) से आशय युवाओं के जीवन-मूल्यों, विचारों, व्यवहार, पहनावे, भाषा, तकनीकी उपयोग, सामाजिक संबंधों तथा जीवन-शैली से है। आधुनिक भारत में वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा, सोशल मीडिया तथा आर्थिक उदारीकरण ने युवा संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके अनेक सकारात्मक तथा नकारात्मक पक्ष हैं।

नवाचार एवं सृजनात्मकता

युवा नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा रचनात्मक विचारों के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाते हैं। स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा उद्यमिता के क्षेत्र में युवाओं की सक्रिय भागीदारी भारत को नवाचार आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर कर रही है। विकसित भारत @2047 के निर्माण में युवाओं की यही सृजनात्मक क्षमता सबसे बड़ी शक्ति मानी जा रही है। युवा समाज में व्याप्त जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, दहेज, अस्पृश्यता तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाकर सामाजिक सुधार के वाहक बनते हैं। शिक्षा एवं सोशल मीडिया के माध्यम से युवा सामाजिक न्याय, मानवाधिकार तथा समानता के पक्ष में प्रभावी जनमत तैयार करते हैं। युवा मतदान, छात्र राजनीति, सामाजिक आंदोलनों, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा जनकल्याणकारी अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। लोकतंत्र में युवाओं की सहभागिता उत्तरदायी नागरिकता तथा सुशासन को सुदृढ़ बनाती है। आज के युवा केवल नौकरी पाने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि स्वयं रोजगार सृजित करने वाले उद्यमी बन रहे हैं। स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

तथा मुद्रा योजना जैसी सरकारी योजनाओं ने युवाओं में स्वरोजगार एवं नवाचार को बढ़ावा दिया है। इससे रोजगार सृजन तथा आर्थिक विकास को गति मिली है। आधुनिक युवा संस्कृति महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, समान अवसर तथा निर्णय लेने के अधिकार का समर्थन करती है। युवाओं में लैंगिक समानता के प्रति बढ़ती जागरूकता परिवार एवं समाज में समानता आधारित संबंधों को मजबूत कर रही है। युवा नई तकनीकों को शीघ्र अपनाते हैं। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शोध, ई-गवर्नेंस तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग समाज को अधिक कुशल एवं ज्ञान-आधारित बना रहा है। युवा राष्ट्र निर्माण, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, स्वच्छता अभियान, आपदा प्रबंधन तथा सामाजिक सेवा जैसे कार्यों में सक्रिय योगदान देते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), नेहरू युवा केंद्र तथा अन्य स्वयंसेवी संगठनों के माध्यम से युवा सामाजिक उत्तरदायित्व निभाते हैं।

युवा संस्कृति के नकारात्मक पक्ष

वैश्वीकरण एवं सोशल मीडिया के प्रभाव से अनेक युवा बिना समालोचनात्मक दृष्टि के पश्चिमी जीवन-शैली का अनुकरण करने लगे हैं। इससे भारतीय संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों तथा सामाजिक परम्पराओं के प्रति उदासीनता बढ़ती दिखाई देती है। आज की युवा संस्कृति में ब्रांडेड वस्तुओं, फैशन, विलासिता तथा दिखावे की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। उपभोक्तावादी सोच के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार नैतिक मूल्यों के स्थान पर आर्थिक सम्पन्नता बनता जा रहा है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, ऑनलाइन गेमिंग तथा सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग युवाओं में समय की बर्बादी, एकाग्रता में कमी, मानसिक तनाव, अवसाद, साइबर अपराध तथा सामाजिक अलगाव जैसी समस्याओं को जन्म दे रहा है। आधुनिक जीवनशैली, व्यक्तिवाद तथा व्यस्तता के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन तथा पारिवारिक संवाद में कमी देखी जा रही है। इससे बुजुर्गों के प्रति सम्मान, सामूहिकता तथा पारिवारिक उत्तरदायित्व जैसी पारम्परिक मान्यताएँ प्रभावित हो रही हैं। कुछ युवाओं में नशीले पदार्थों का सेवन, शराब, तंबाकू तथा अन्य मादक पदार्थों की लत बढ़ रही है। इससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के साथ अपराध, हिंसा तथा असामाजिक गतिविधियों में वृद्धि की संभावना भी बढ़ जाती है। प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, कैरियर का दबाव, सोशल मीडिया पर तुलना तथा असफलता के भय के कारण युवाओं में तनाव, चिंता, अवसाद तथा आत्महत्या जैसी गंभीर समस्याएँ बढ़ रही हैं। मानसिक स्वास्थ्य आज युवा संस्कृति की प्रमुख चुनौती बन चुका है। वैश्वीकरण के प्रभाव से स्थानीय भाषाओं, लोककला, लोकसंस्कृति तथा पारम्परिक ज्ञान के प्रति युवाओं का आकर्षण अपेक्षाकृत कम हो रहा है। इससे सांस्कृतिक विविधता एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की चुनौती उत्पन्न होती है। व्यक्तिवादी जीवनशैली, त्वरित संतुष्टि की प्रवृत्ति तथा डिजिटल संचार के बढ़ते प्रभाव के कारण पारस्परिक संबंधों में स्थायित्व एवं

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

विश्वास की कमी देखने को मिलती है। इससे परिवार एवं समाज दोनों प्रभावित होते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारतीय परिप्रेक्ष्य में युवा संस्कृति सामाजिक परिवर्तन की एक सशक्त एवं गतिशील प्रक्रिया के रूप में उभरकर सामने आई है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, शिक्षा, संचार क्रांति तथा आर्थिक उदारीकरण ने युवाओं की जीवनशैली, विचारधारा, सामाजिक संबंधों एवं आकांक्षाओं में व्यापक परिवर्तन किए हैं। एक ओर युवा वर्ग नवाचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, उद्यमिता, लोकतांत्रिक सहभागिता, लैंगिक समानता तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, वहीं दूसरी ओर उपभोक्तावाद, मानसिक तनाव, बेरोज़गारी, नशाखोरी, साइबर अपराध, सांस्कृतिक असंतुलन तथा सोशल मीडिया की अत्यधिक निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भी उभर रही हैं। स्पष्ट है कि युवा संस्कृति न तो पूर्णतः सकारात्मक है और न ही पूर्णतः नकारात्मक, बल्कि यह सामाजिक परिस्थितियों एवं नीति-निर्माण से प्रभावित एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है।

इन परिस्थितियों में आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरक, कौशल-आधारित एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा को सुदृढ़ किया जाए। परिवार एवं शैक्षणिक संस्थान युवाओं में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान विकसित करें। सरकार को कौशल विकास, स्टार्टअप, उद्यमिता, मानसिक स्वास्थ्य, डिजिटल साक्षरता तथा रोजगार सृजन संबंधी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए। साथ ही सोशल मीडिया के विवेकपूर्ण उपयोग, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण तथा लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। परंपरा और आधुनिकता के संतुलित समन्वय के माध्यम से ही युवा शक्ति विकसित भारत-2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में प्रभावी एवं रचनात्मक भूमिका निभा सकेगी।

संदर्भ सूची:

Parsons, Talcott (1951). *The Social System*. Free Press, New York.

Mannheim, Karl (1952). *Essays on the Sociology of Knowledge.* Routledge & Kegan Paul, London.

Giddens, Anthony (2009). *Sociology* (6th Edition). Polity Press, Cambridge.

Hall, Stuart & Jefferson, Tony (1976). *Resistance Through Rituals: Youth Subcultures in Post-War Britain.* Routledge, London.

Hebdige, Dick (1979). *Subculture: The Meaning of Style.* Routledge, London.

Srinivas, M. N. (1966). *Social Change in Modern India.* University of California Press.

Singh, Yogendra (1973). *Modernization of Indian Tradition.* Thomson Press, New Delhi.

Dube, S. C. (1990). *Indian Society. National Book Trust,* New Delhi.

Shah, A. M. (1998). *The Family in India: Critical Essays.* Orient Longman, New Delhi.

Béteille, André (1996). *Society and Politics in India.* Oxford University Press, New Delhi.

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

Desai, A. R. (2005). *Social Background of Indian Nationalism*. Popular Prakashan, Mumbai.

Gore, M. S. (2003). *Unity in Diversity: The Indian Experience in Nation Building*. Rawat Publications, Jaipur.

Ogburn, William F. (1964). *On Culture and Social Change*. University of Chicago Press.

Inkeles, Alex (1969). *Making Men Modern. American Journal of Sociology*.

Government of India (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education, New Delhi.

Ministry of Youth Affairs & Sports (2022). *National Youth Policy* (Draft), Government of India.

Ministry of Statistics and Programme Implementation (MOSPI). *Youth in India Report.* Government of India.

NITI Aayog (2023). *India @2047: Vision for Developed India.* Government of India.

Census of India (2011). *Primary Census Abstract. Office of the Registrar General & Census Commissioner*, India.

National Sample Survey Office (NSSO). *Employment and Unemployment Reports*. Government of India.

UNESCO (2021). *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education.* Paris.

United Nations (2023). *World Youth Report. United Nations*, New York.

World Bank (2024). *World Development Report. World Bank,* Washington, D.C.

Castells, Manuel (2010). *The Rise of the Network Society.* Wiley-Blackwell.

Bauman, Zygmunt (2007). *Liquid Times: Living in an Age of Uncertainty*. Polity Press.

Kumar, Krishna (2005). *Political Agenda of Education.* Sage Publications, New Delhi.

Received **02 July 2026**; Accepted **26 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License